मिथिलावासियों के हृदय में राजनीतिक जागृति का उदभव एवं विकास : एक विवेचना

डॉ॰ डैजी कुमारी

मिथिला के लोगों में राष्ट्र के लिए अगाध प्रेम था। यही वजह है कि वहाँ के लोगों ने तन–मन–धन से काँग्रेस का साथ दिया। अनेक महान पुरूष काँग्रेस को गुप्तदान देते रहे। स्वराज आंदोलन को संपोषित करने के लिए जब काँग्रेस ने 'मुठिया प्रथा' चलाया तो मिथिला की ललनाएँ इसमें सहर्ष योगदान करती रही। इस मुठिया में आशीर्वाद और सहयोग क्षेत्रों का मणीकांचन सहयोग होता था। इससे स्वतंत्रता के प्रति समाज में अगाध श्रद्धा बढ़ती गयी। गरीब एवं धनी सभी परिवार की स्त्रियाँ सहर्ष मुठिया रखती थी।

राष्ट्रीय जागृत का मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा जनता का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण थी। राष्ट्रीय जागृति की पहली शर्त होती है कि जन साधारण को अपनी आवश्यकताओं का ज्ञान हो और उसे प्राप्त करने के लिए वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हों। साथ ही न सबों के लिए आवश्यक है जन साधारण का मनोवैज्ञानिक रूप से निर्भीक होना। गाँधी जी ने चंपारण सत्याग्रह के प्राथमिक चरण में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध भय मुक्तता का पाठ किसानों को पढ़ाया तथा किसानों के अंदर से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के मुखौटों तथा काली नीति का पर्दाफाश किया।